बेहतर सीखने की तैयारी के रूप में आकलन

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

यह आम समझ है कि आकलन सीखने की प्रक्रिया में बाधा नहीं, बल्कि एक सहयोगी प्रक्रिया है जिसमें बच्चों के निरन्तर व नियमित आकलन से उनकी रोज़मर्रा की अधिगम प्रगति का जायज़ा लिया जाता है। आज के सन्दर्भ में आकलन की पूरी प्रक्रिया व समझ और शिक्षकों की चुनौतियों को कक्षा के स्तर पर गहनता से समझते हुए इसे क्रियान्वित करने की ज़रूरत है जिससे विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने को बेहतर बनाने के अपेक्षित परिणाम हासिल किए जा सकें।

स्कूली शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आकलन पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि सीखने के जिन प्रतिफलों के अनुरूप कक्षा की प्रक्रियाएँ चलीं, वह कितनी सुचारु रूप से चलीं, और उनका क्या प्रभाव रहा। असल में, आकलन का उद्देश्य बच्चों को फ़ेल या पास करने से काफ़ी आगे का है। मक़सद यह समझना है कि सीखने के जिन उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या का हाथ थामकर चले थे, वहाँ तक पहुँचे या नहीं। कितने बच्चे वहाँ पहुँचे, कितने बच्चे कितनी दूरी पर रुककर रह गए, और उनके गन्तव्य तक न पहुँच पाने के क्या कारण हैं, इन कारणों को समझना और उन्हें ध्यान में रखते हुए शिक्षण योजना में परिवर्तन करना ही आकलन का उद्देश्य है। आकलन की इस प्रक्रिया के भीतर जो रचनात्मकता और सकारात्मकता है, उसे समझना बेहद ज़रूरी है।

अब जबकि कक्षा 5 और 8 के लिए 'नो डिटेंशन पॉलिसी' को ख़त्म करने की बात हुई है, इसका मतलब यह समझना कि अब बच्चों को फ़ेल किया जा सकेगा, ठीक नहीं है। असल में, उसका उद्देश्य भी वही है जिसके चलते जो बच्चे सीखने के प्रतिफलों से तनिक दूर रह गए हैं, उनके साथ थोड़ा और समय लगाकर उन्हें नए सत्र की शुरुआत से पहले और बेहतर सिखा पाना है। नो डिटेंशन पॉलिसी के पक्ष और विपक्ष में तर्क हो सकते हैं, लेकिन यह ध्यान रखना ज़्यादा ज़रूरी है कि हर बच्चा सीख सकता है, और सीखना हर बच्चे का अधिकार है। पास-फ़ेल, कम या ज़्यादा नम्बर का मामला बिल्कुल अलग है। हालाँकि ज़मीनी तौर पर काम कर रहे शिक्षकों के सामने ढेर सारी चुनौतियाँ होती हैं जिन्हें समझे बग़ैर बात पूरी स्पष्ट नहीं हो सकती। शिक्षकों के सामने, आयु के आधार पर बच्चों को कक्षा में दाख़िला देना, विविध दक्षता स्तर व पृष्ठभूमि के बच्चों को सिखाना, और पुरानी छूट गई कक्षाओं का पाठ्यक्रम पूरा कराते हुए उन्हें नई कक्षा की दक्षताओं तक लाने जैसी चुनौतियाँ रहती हैं। इन चुनौतियों पर शिक्षक साल भर काम करते रहते हैं। वार्षिक परीक्षा के बाद रिपोर्ट कार्ड में दर्ज नम्बरों से इतर एक शिक्षक अपने बच्चों की अकादमिक प्रगति को ठीक-ठीक जानता है जिसमें सतत् व व्यापक मूल्यांकन की समझ निहित रहती है।

> शिक्षकों की आकलन को लेकर समझ, बच्चे की सीखने की प्रगति को लेकर समझ के बीच ही कहीं शिक्षा की वह दृष्टि रहती है जिससे बच्चों का सीखना सुनिश्चित होता है, न कि प्रतियोगिता का बोझ या फ़ेल होने का भय होता है।

ऐसा नहीं है कि इस बारे में विचार नहीं किया गया है। स्कूली शिक्षा व्यवस्था में आकलन की अवधारणा में रचनात्मक आकलन (फ़ॉर्मेटिव एसेसमेंट) और योगात्मक आकलन (समेटिव एसेसमेंट) जैसे शब्द प्रचलित हैं, और उन्हें धरातल पर उतारने की मंशा भी सम्मिलित है। अब सवाल यह उठता है कि आकलन को लेकर वास्तविक समझ, संवेदना आख़िर छूट कहाँ जाती है। स्कूली शिक्षा व्यवस्था क्या करे कि पाठ्यचर्या के महत्त्वपूर्ण अवयव, आकलन से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयास रचनात्मक बन सकें, परीक्षा का भय और नम्बरों की दौड़ से इतर सही अर्थों में सीखना इनके केन्द्र में हो। इसके साथ ही, यह समझना भी कि क्या-क्या सीखना अभी बाक़ी है, और उस बाक़ी तक कैसे पहुँचा जाए।

इसके लिए आज के परिप्रेक्ष्य में आकलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया और समझ को कक्षा के स्तर पर जानना-समझना होगा।

चित्र 1: अपने सीखे और जाने गए को लिखते विद्यार्थी

रचनात्मक आकलन का उद्देश्य बच्चे की कक्षा से सम्बन्धित विषयों की अवधारणा पर दक्षता और सीखने के परिणाम (लर्निंग आउटकम) पर हो रही प्रगति या उसमें आ रही बाधा को समग्रता से समझना है। लेकिन धरातल पर रचनात्मक आकलन में ऐसा होता नहीं दिखता है।

फ़िलहाल रचनात्मक आकलन से प्राप्त अंकों को नोट कर सत्र के अन्त में परीक्षा की अंक तालिका में लिखने तक की ही प्रक्रिया दिखती है। बच्चों द्वारा रचनात्मक आकलन में दिए गए उत्तरों का न तो विश्लेषण किया जाता है न ही इनसे बनी समझ का उपयोग पठन-पाठन में किया जाता है।

अब योगात्मक आकलन की बात कर लें। विद्यालयी शिक्षा के विषयों में निहित अवधारणाएँ पृथक या एकाकी नहीं होती हैं, बल्कि उनमें एक तारतम्यता होती है। एक तरफ़ यह अन्य अवधारणाओं से जुड़ी होती हैं, वहीं दूसरी ओर स्कूली शिक्षाक्रम में आगे आने वाली कक्षाओं में उत्तरोतर जटिलता के साथ निरन्तरता में होती हैं। इसी प्रकार, विषय भी बाड़े में बँधे नहीं होते हैं, उनमें एक अन्तर्सम्बन्ध होता है। ऐसी परिस्थिति में सत्र के अन्त में प्रत्येक कक्षा में किया जाने वाला आकलन भी मात्र योगात्मक आकलन नहीं रह जाता, बल्कि अगली कक्षा के अध्यापक के लिए बच्चे के सीखने के स्तर को समझने में यह एक प्रभावी उपक्रम हो सकता है। अपने विद्यार्थियों की गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए सजग अध्यापक को इसके प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

रचनात्मक आकलन को इसके वास्तविक स्वरूप में स्थापित किए जाने की प्रबल आवश्यकता है। विद्यालय में इसे दो स्तरों पर किया जा सकता है– पहला, प्रश्न पत्र निर्माण की प्रक्रिया के दौरान; और दूसरा, परीक्षा के उपरान्त प्राप्त बच्चों के उत्तरों की जाँच से। रचनात्मक आकलन के प्रश्न पत्र निर्माण के दौरान अध्यापक को इस बात के लिए सचेत रहना होगा कि किस प्रश्न से किस दक्षता और किस सीखने के परिणाम की जाँच करना चाहते हैं, और वह भी किस संज्ञानात्मक स्तर पर। इसी प्रकार, विद्यार्थियों के उत्तरों की जाँच करते समय इस पर सचेत रहते हुए उन दक्षताओं और सीखने के परिणामों में हो रही प्रगति या आ रही बाधाओं का विश्लेषण करने की आवश्यकता है। बच्चे के उत्तरों के सूक्ष्म विश्लेषण से ही यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि विभिन्न दक्षताओं और किसी अवधारणा पर आधारित सीखने के परिणामों पर उसकी प्रगति क्या है, और उसे किसी दक्षता को प्राप्त करने में कहाँ समस्या आ रही है। अगर ऐसा करते हैं तो हम बच्चे के सीखने में उसकी वांछित मदद कर पाएँगे। इस तरह के विश्लेषण से बनी समझ का पठन-पाठन की प्रक्रिया में उपयोग करने से बच्चे के बेहतर सीखने के अवसर बनेंगे, और स्कूली शिक्षा गुणवत्तापूर्ण, समावेशी व समतामूलक बन सकेगी।

आकलन पर होने वाला आज तक का समूचा विमर्श यह स्थापित करता है कि आकलन सीखने के लिए होना चाहिए न कि सीखे गए को मापने के लिए किए गए मूल्यांकन के तौर पर। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने स्कूल-आधारित आकलन के आधार पर तैयार होने वाले व अभिभावकों को दिए जाने वाले प्रगति कार्ड को नए स्वरूप में देने की अनुशंसा की है। इस प्रगति

चित्र 2 : सीखने का आनन्द लेते विद्यार्थी

कार्ड की 360-डिग्री व बहुआयामी कार्ड के रूप में संकल्पना की गई है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं साइकोमोटर विकास के बारीक़ी से किए गए विश्लेषण और विशिष्टता का विवेचन होगा। आकलन के इस प्रारूप का उद्देश्य शिक्षा को सर्वांगीण विकास के तौर पर देखने का है, जैसा कि शिक्षा की परिभाषा में कहा जाता है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन इसी ओर एक प्रयास था। आज के परिप्रेक्ष्य में इस स्तर की तैयारी हमारी स्कूली शिक्षा में नहीं के बराबर दिखती है, लेकिन हमें अभी से इस ओर मज़बूती से क़दम बढ़ाने की ज़रूरत है, और इसकी शुरुआत परीक्षा के इस मौसम से ही की जा सकती है।

पहले क़दम के तौर पर आकलन की प्रक्रिया को कक्षा की प्रक्रिया से जोड़ना होगा। अध्यापक को अपने विषय से सम्बन्धित अवधारणाओं, दक्षताओं और सीखने के परिणामों के संज्ञानात्मक स्तर को समझते हुए आकलन की प्रक्रिया करनी होगी। आकलन के लिए योजना बनाते समय अध्यापक का प्रयास इस बात पर होना चाहिए कि बच्चा सम्बन्धित दक्षता का अनुप्रयोग, विश्लेषण और उस पर तार्किक चिन्तन कर सके। यह तभी सम्भव होगा जब आकलन के बारे में हम अध्यापकों में सुस्पष्ट समझ व दृष्टि हो। प्रारम्भिक स्तर पर आकलन मौखिक व लिखित, दोनों रूपों में हो तो बेहतर होता है, क्योंकि इससे किसी अवधारणा को सीखने में हो रही प्रगति या इसमें आने वाली समस्या का सही-सही आकलन सम्भव है।

> **यह ध्यान रखना ज़्यादा ज़रूरी है कि हर बच्चा सीख सकता है, और सीखना हर बच्चे का अधिकार है।**

स्कूली शिक्षा में आकलन के नए नज़रिए को स्थापित करना बहुत आवश्यक है। आकलन जब सीखने में मदद करने के औज़ार के रूप में स्थापित होगा तब परीक्षा के भय से बच्चों को निजात मिल सकेगी, और स्कूली व्यवस्था में आनन्ददायक शिक्षा का सूत्रपात हो पाएगा। इसके वाहक अध्यापकों से यह बड़ी अपेक्षा है कि वह अपनी कक्षा में किए जा रहे आकलन पर पुनर्विचार करें, और आकलन को उसकी मूल भावना के रूप में स्थापित करने का प्रयास करें। एक बेहतर आकलन प्रक्रिया से ही बेहतर सीखना और सिखाना सम्भव है।

कैलाश चन्द्र काण्डपाल शिक्षा में लम्बे समय से सक्रिय हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन मध्य प्रदेश में काम किया। बिहार, उत्तराखण्ड में बतौर राज्य प्रमुख कार्य किया। इन दिनों, आप झारखण्ड में भी राज्य प्रमुख की भूमिका में हैं। लिखने-पढ़ने और हमेशा कुछ नया सीखने की उनकी रुचि उन्हें लगातार सक्रिय रखती है। आप उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं, *शैक्षिक प्रवाह* व *उम्मीद जगाते शिक्षक* के सम्पादक भी रहे हैं।

सम्पर्क : kandpal@azimpremjifoundation.org